RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | No.12 | December 2021 | pp. 113-119
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Marriage Rituals in Kol Tribe | कोल जनजाति में विवाह संस्कार

*Om Prakash

Research Scholar, History Department, Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (M.P.)

Abstract

Marriage is a sacred bond in which the bride and groom, taking their clan gods and fire as witnesses, commit to live together in each other's happiness and sorrow and in future life. In the Kol tribe, marriages are performed by many small rituals. Mandap Chhajan and Mayan Puja, Matrika Puja or Maati Mangal, the ritual of offering oil, Parchan, Janvasa, Dwarchar or Dwar Puja, Oli Bharai, Lava Parswai, Sindoordan, Mangal Phere, Kanyadaan, foot worship and Khobar. But in the present scenario, the role of the pandit in the marriage ceremony is visible from beginning to end. In the evening, men and women gather under the pavilion in the courtyard for entertainment, singing and singing with the help of musical instruments like dholak etc. Koldahka dances while playing. The groom resolves the bride to keep the promise. Always give advice to live happily with each other. After the marriage at the young age of the first bride, the gauna was performed in the third, fifth or seventh year when the bride became an adult. But now after becoming an adult, due to the marriage taking place, the cow is also done immediately. Remarriage among tribes is not difficult nor is it considered wrong. Yet divorce or divorce is not encouraged in any tribe.

Keywords: *Tribal, Marriage, Baghelkhand, Mayan, Puja, Koldahka, Parchan, Kohbar*

Abstract in Hindi

विवाह एक पवित्र बंधन होता है जिसमें अपने कुल देवताओं तथा अग्नि को साक्षी मानकर वर तथा कन्या एक दूसरे के सुख–दुःख तथा भावी जीवन में साथ रहने के लिए वचनबद्ध होते है। कोल जनजाति में विवाह अनेक छोटी–छोटी रस्मों द्वारा सम्पन्न किया जाता है। मण्डप छाजन तथा मायन पूजा, मातृका पूजन या माटी मंगल, तेल चढ़ाने की रश्म, परछन, जनवासा, द्वारचार या द्वारपूजा, ओली भराई, लावा परसवाई, सिन्दूरदान, मंगल फेरे, कन्यादान, पाँव पुजाई और कोहबर।शायद पहले इन संस्कारों को बिना पण्डित के सम्पन्न किया जाता रहा होगा किन्तु वर्तमान परिदृश्य में विवाह संस्कार में पण्डित की भूमिका शुरू से अन्त तक दिखाई देती है।शाम के समय कोल पुरुष तथा महिलाएँ मनोरंजन के लिए आंगन में मण्डप के नीचे एकत्रित होकर ढोलक आदि वाद्य यंत्रों की सहायता से गाते व बजाते हुए कोलदहका नृत्य करते है। वर वधू को वचन निभाने के लिए संकल्पित करते है। एक दूसरे के साथ सदैव सुखपूर्वक जीवनयापन की सलाह देते हैं। पहले वधू की छोटी उम्र में विवाह के बाद तीसरे, पांचवे या सातवें वर्ष जब वधू वयस्क हो जाती थी गौना सम्पन्न किया जाता था। परन्तु अब वयस्क होने के उपरान्त विवाह होने के कारण तुरन्त ही गौना भी करा लिया जाता है। जनजातियों में पुनर्विवाह में कठिनाई नहीं होती है और न ही इसे गलत माना जाता है। फिर भी किसी भी जनजाति में विवाह विच्छेद या तलाक को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है।

Keywords: *जनजातीय विवाह बघेलखण्ड मायन पूजा कोलदहका परछन कोहबर*

Article Publication

Published Online: 15-Dec-2021

***Author's Correspondence**

Om Prakash

Research Scholar, History Department, Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (M.P.)

shekhar1090[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

वेस्टरमार्क के अनुसार– विवाह एक या अधिक पुरूषों का एक या अधिक स्त्रियों के साथ होने वाला यौन संबंध है जो प्रथा या कानून द्वारा मान्य होता है तथा जिसमें दोनों पक्षों तथा उनके बच्चों के अधिकारों तथा कर्तव्यों का समावेश होता है। *Westermarck, The History of Human Marriage, Voll-1, P-26.*

जनजातीय विवाह

जनजाति व्यक्तियों का वह समूह है जो निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती है जिनकी एक सामान्य संस्कृति होती है एक विशिष्ट पूर्वज से अपना उद्भव मानती हैं। घुरिये ने इन्हें पिछड़े हिन्दू की संज्ञा दी है। इन्हें जनजाति, वन्यजाति, आदिम जाति तथा आदिवासी आदि नामों से जाना जाता है। जनजातीय विवाह की अपनी अलग विशेषताएँ हैं।

जनजातियों में वर पक्ष द्वारा वधू मूल्य चुकाकर विवाह की व्यवस्था है साथ ही विवाह को एक अनुबंध या समझौता माना जाता है इसलिए विवाह विच्छेद का भी प्रावधान है। जनजातियों में विवाह यौन भावना की संतुष्टि मात्र नहीं अपितु अनेक आर्थिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करता है। जनजातियों में विवाह कम आयु में कर दिया जाता है। आजकल ग्रामीण तथा नगरीय लोगों से संपर्क, शिक्षा तथा सरकारी प्रयासों से विवाह की आयु में वृद्धि देखी जा रही है फिर भी अपेक्षाकृत विवाह की आयु कम है। सामान्यतया भारतीय जनजातियों में आठ प्रकार के विवाह प्रचलित हैं–

1. क्रय विवाह 2. परिवीक्षा विवाह 3. अपहरण विवाह 4. परीक्षा या परीक्षण विवाह 5. सेवा विवाह 6. विनिमय या बदला विवाह 7. हठ विवाह 8. अधिग्रहण विवाह

कोल जनजाति में विवाह संस्कार

विवाह एक पवित्र बंधन होता है जिसमें अपने कुल देवताओं तथा अग्नि को साक्षी मानकर वर तथा कन्या एक दूसरे के सुख–दुःख तथा भावी जीवन में साथ–साथ रहने के लिए वचनबद्ध होते है। जनजातीय संदर्भ में देखा जाय तो यह बात स्पष्ट होती है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में स्त्री चाहे वह कन्या हो या विवाह पश्चात् किसी पुरुष की अर्धांगिनी हो सदैव आर्थिक क्रियाओं में बराबर की भागीदार होती है। वह पति के साथ उसके काम में साथ होती है। यहाँ तक की पति से ज्यादा मेहनत वह घर को संभालने में करती है इसलिए जनजातियों में वधु शुल्क की परम्परा हमें दिखाई देती है।

बघेलखण्ड क्षेत्र के अन्य समुदायों की भांति कोल जनजाति में भी विवाह एक प्रमुख संस्कार माना जाता है। शायद पहले इन संस्कारों को बिना पण्डित के सम्पन्न किया जाता रहा होगा किन्तु वर्तमान परिदृश्य में विवाह संस्कार में पण्डित की भूमिका शुरू से अन्त तक दिखाई देती है। कोल जनजाति में विवाह प्रायः घर के बड़े बुजुर्गों द्वारा रिश्तेदारों के माध्यम से निश्चित किया जाता है। लड़के–लड़की की आयु 16–18 वर्ष पूर्ण होने पर उनके लिए रिश्ते की बात शुरू होती है। विवाह के लिए प्रमुख रिश्तेदारों मामा, बुआ, फूफा तथा आस–पास के वृद्ध लोगों द्वारा पहल शुरू की जाती है। प्रायः विवाह जान–पहचान के लोगों के बीच और 40–50 कि.मी. की दूरी में ही तय किये जाते हैं।

कोल जनजाति में विवाह अनेक छोटी–छोटी रस्मों द्वारा सम्पन्न किया जाता है। यह रश्में लड़के–लड़की को देखने से लेकर विवाह उपरान्त चलती रहती है। कोल जनजाति में बड़े बुजुर्गों तथा रिश्तेदारों द्वारा तय किये जाने के उपरान्त नियत तिथि को वर पक्ष के लोग पिता, चाचा तथा फुफा और जीजा लड़के की बहन या बुआ के साथ लड़की के घर आते है। वहाँ उन्हें उचित स्थान देकर खातिरदारी की जाती है, भोजन उपरान्त लड़की पान आदि थाली में लेकर आती है इसी समय वर पक्ष के लोग कुछ बात–चीत लड़की से करते है और उसे कुछ रुपये–पैसे देते है इसके बाद लड़की पसन्द होने पर रिश्ता पक्का हो जाता है। रिस्ता पक्का होने के बाद लड़की का पिता या दादा गाँव के पण्डित से शुभ लग्न की जानकारी प्राप्त कर लड़के वालों को बताता है और फल–फूल तथा मिष्ठान आदि लेकर लड़के के घर लग्न लेकर जाता है और नियत तिथि को बरात लेकर आने के लिए आग्रह करता है। इसके पूर्व ही तिलक तथा बरीक्षा (वर–इच्छा) की रश्में भी सम्पन्न की जाती है।

मातृका पूजन या माटी मंगल

यह रश्म वर एवं वधू दोनों पक्षों में नियत तिथि को (प्रायः विवाह के एक दिन पहले) सम्पन्न की जाती है। इसमें परिवार की स्त्रियाँ (गोतिन) भाग लेती है। नियत समय पर सभी स्त्रियाँ एकत्रित होती हैं वे साथ में कुछ अनाज शुभ के लिए लाती है और घर से फावड़ा तथा टोकरी लेकर डीह (पूर्वजों के निवास स्थान) पर जाती है साथ ही महिलाएँ तथा लड़कियाँ गीत गाती है। गोतिन मिट्टी की पूजा करके खोदती है और टोकरी में भरकर सिर पर रखकर वापस आ जाती है। इस मिट्टी को घर में लाकर आंगन में रख दिया जाता है, इस मिट्टी से आंगन में ही बाद में चौक तथा मंदिर और चूल्हे बनाये जाते है। इसके बाद आस–पास की स्त्रियों में गुड़ तथा तेल का वितरण किया जाता है।

मण्डप छाजन तथा मायन पूजा

दूसरे दिन शुभ मुहुर्त में जो पूर्व निर्धारित होता है घर तथा परिवार के पुरुष आसपास या जंगल में मण्डप छाजन के लिए पेड़ों की टहनियां लाने जाते हैं। एक मुख्य डाली को चिन्हित किया जाता है और उसमें निशान बनाया जाता है तथा उसमें ऊपर की ओर छोटी–छोटी दो कनखियाँ छोड़ दी जाती है। इसी समय लोहार द्वारा मगरोहन, पीढ़ा तथा

चिरई लायी जाती है, इसके बदले उसे नेग दिया जाता है। परिवार के लोगों के द्वारा आंगन में बीच में एक गड्ढा खोदा जाता उसमें डालियों को खड़ा कर दिया जाता है तथा बीच में मुख्य डाली मगरोहन तथा चिरई आदि खड़ा किया जाता है। मगरोहन खड़ा करने पर लड़की की माँ बेसन, हल्दी घोलकर सभी लोगों को जो इस कार्य में लगे होते हैं हाथ के पंजे से निशान लगाती है जिसे थाप कहते हैं। महिलाएँ एकत्रित होकर गीत गाती है। मगरोहन गाड़ने के बदले फुफा को कुछ नेग के साथ गारी गायी जाती है।

मण्डप छाजन तथा मगरोहन गड़ने के पश्चात माटी मंगल से लायी गयी मिट्टी द्वारा मगरोहन के पास एक छोटा मंदिर, एक चौक (चौकोर आकार का मिट्टी का पाट) बनाया जाता है तथा उस चौक पर एक घड़ा रखा जाता है। घड़े को चने की दाल व घुघुची की सहायता से सजाकर उसमें गोबर से डिजाइन बनायी जाती है। मगरोहन के पास में गृहस्थी की प्रायः सभी प्रमुख वस्तुएँ सम्बल, फावड़ा, सूपा, सिलौटी, मूसर आदि भी रखा जाता है। आंगन में सिल पोहने की रश्म होती है। लडकी के माता–पिता सिल बदलकर बारी –बारी से चने की दाल पीसते है यह क्रम 7 बार करते है। शेष दाल परिवार की अन्य स्त्रियाँ पीसती है।

इसके बाद आंगन में ही चूल्हा जलाया जाता है। कढ़ी, फुलौरी, रिखमज, बरा, दाल, चावल, पूड़ी आदि व्यंजन बनते है और मायन पूजा के लिए तैयार करते है। लड़की का पिता परिवार के 3 या पाँच लोगों के साथ मण्डप में पूजा करते है तथा वहाँ हवन आदि करके एक छोटी चुकिया में मदाइन (देशी शराब) भरकर पूर्वजों तथा इष्ट देवताओं को समर्पित करते हुए मगरोहन में लटका देते हैं। भाई बन्धुओं के साथ रिश्तेदारों को आमंत्रित किया जाता है जिन्हें मण्डप पूजा के बाद भोजन कराया जाता है और शराब पिलाई जाती है।

तेल चढ़ाने की रश्म

तेल चढ़ाने की रश्म लड़के तथा लड़की दोनों पक्षों की तरह होती है, तेल चढ़ जाने के बाद लड़के–लड़की को कुछ मनाही होती है जैसे– वे अकेले घर से बाहर नहीं जाते है, भूत प्रेत बाधाओं से बचने के लिए कुछ लोहे की वस्तु साथ में रखेगे, कुएँ तथा अन्य जल राशियों के पास अकेले नहीं जायेगे तथा अधिकतर समय सखी सहेलियों के साथ कमरे में ही रहेंगे। तेल चढ़ाने की रश्म मण्डप के नीचे आंगन में ही बुआ की देखरेख में सम्पन्न होती है। नियत स्थान पर पीढ़ा पर बैठने के पश्चात् परिवार की अन्य छोटी लड़कियाँ जो कुँआरी हो लड़की को तीन–तीन बार तेल में हल्दी की गांठ और दूब की सहायता से पहले पैर के पंजे, फिर घुटने, फिर कंधे फिर, सिर पर तेल लगाती है। यह काम तीन, पाँच या सात लड़कियाँ करती है जिसमें बुआ उनका सहयोग करती है। शाम को फुर्सत के समय लड़की को मेंहदी लगायी जाती है और इसी बीच लड़की के हाथ में मेंहदी से ही बहुत चालाकी से चूल्हे का नाम भी लिख देती है। यह मान्यता है कि यदि दूल्हा दुल्हन से प्यार करता है तो मेंहदी का रंग खूब चढ़ता है नहीं तो रंग फीका होता है।

शाम का कार्यक्रम गीत और नृत्य (कोलदहका)

शाम के समय कोल पुरुष तथा महिलाएँ मनोरंजन के लिए आंगन में मण्डप के नीचे या द्वार पर एकत्रित होकर ढोलक, डुग्गी (छोटी नगडिया जैसी) घुघुरू आदि वाद्य यंत्रों की सहायता से गाते व बजाते हुए नृत्य करते है। पुरूष वर्ग वाद्य यंत्रों की थाप पर जोश व स्फूर्ति से भरपूर गाते है और महिलाएँ चारों ओर घूम–घूम कर नाचती है और गाती भी है, यह वाद–प्रतिवाद तथा हास प्रतिहास का दौर चलता है। महिलाएँ हाथ की कलाई को धुमाकर, आंचल पकड़कर तथा नीचे झुककर गोल–गोल चक्कर लगाकर नाचती है। घर की पुताई–लिपाई और साफ सफाई होती है। दीवारों पर चित्र आदि बने होते है और फूल पत्तियों, पशु पक्षियों के चित्रों के साथ दूल्हा दूल्हन का नाम भी लिखा होता है।

लड़के की बुआ द्वारा आंगन में ही मण्डप के नीचे लावा भूनने की रश्म होती है जिसमें लड़के की बुआ मिट्टी के पात्र में धान को भूनती है जिससे वे लाई की तरह बन जाते है इस समय कुछ भाभियाँ बुआ को परेशान करती है और गारी गाती है। यह लाई दुल्हन के यहाँ जाती है जहां अंजुरी भराई के समय लड़की के भाई द्वारा रश्म पूरी की जाती है। वर पक्ष का लावा दुल्हन के पक्ष के लावा के साथ बदला जाता है।

इमली घोटाई

लड़के को सिलवट पर बैठाकर उसकी मम्मी, चाची, भाभी एक कपड़े के चारों कोनों को पकड़कर खड़ी होती है। बुआ लड़के के साथ बैठी होती है। परिवार की स्त्रियाँ आम की पत्ती के डंठल को लड़के से कटाती है इस दौरान लड़के के मामा पक्ष के लोग लड़के की माता को नेग स्वरूप कुछ पैसे और वस्त्र आदि देते है और मामी–मामा लड़के को पानी पिलाते है। लड़के को कोहबर में अपने पूर्वजों को हवन करके पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त करता है। वहां से उठकर बुआ लड़के को स्नान कराने ले जाती है। दूल्हा को नहाने के पश्चात् बुआ आंगन में मण्डप के नीचे ले आती है। लड़के को नये वस्त्र पहनाये जाते है और कपड़ों के ऊपर जोरा जामा (एक झीना कपड़ा जिसे हल्दी से शुद्ध किया गया हो और ढीला हो) पहनाया जाता है।

परछन

लड़के को तैयार करके पगड़ी (मोर) पहनायी जाती है जो प्रायः फूफा (बुआ के पति) द्वारा लायी जाती है। लड़के को भूत–प्रेत की बाधाओं को दूर रखने के लिए नींबू जेब में डाल दिया जाता है। दूल्हे के साथ में किसी छोटे भाई को भी दूल्हे की तरह तैयार किया जाता है जिसे सहवाला कहते है। दूल्हे को पूरी तरह तैयार होने के बाद परिवार तथा रिश्तेदारी के पुरुष तथा महिलाएँ बड़े चाव में फोटो खिंचवाते है। इसमें लड़के की बुआ गाड़ी के पास लाती है दूल्हे की माता दूल्हे का परछन करती है। माता पानी से आचमन करती है तथा गाड़ी की भी पूजा करती है और आटे की पिंडी से नजर उतारकर उसके सर के ऊपर से फेंकती है इस समय की पारम्परिक गीत गाती है और दूल्हे के सकुशल वापसी के लिए कुल देवताओं तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है।

जनवासा

बारात लड़की पक्ष के गाँव में पहुँचती है तो वहाँ नियत स्थान पर बारात वाले के रूकने, पानी तथा नाश्ते की व्यवस्था होती है। जनवासा में प्रकाश की उत्तम व्यवस्था तथा टेंट आदि लगे होते है गद्दे बिछे होते है वहां पर सभी बाराती आते है और मिलते हैं। वहाँ कुछ समय विश्राम करने के पश्चात् बाराती तैयार होते है और बैण्ड बाजे के साथ नाचते गाते हुए लड़की के घर द्वारचार के लिए चलते है।

द्वारचार या द्वारपूजा

गाँव की आसपास की महिलाएँ, पुरुष तथा रिश्तेदार लड़की वाले के घर बारात देखने आते हैं। पण्डित जी द्वारा चौक (बेदी) बनायी जाती है। आटा, हल्दी, गुलाल, अबीर की सहायता से बेदी बनाते है और गोबर की गौर बनाते है। लड़की की बुआ मण्डप के नीचे का कलश सिर पर रखकर बारातियों को शुभ के लिए दिखाती है जिसके बदले उन्हें नेग मिलता है और वह कलश बाद में पण्डित जी के सामने द्वारचार के लिए नियत स्थान पर बेदी पर रखा जाता है। पंडित जी दूल्हे द्वारा गृह देवता तथा अन्य देवताओं की गौरी गणेश की पूजा करायी जाती है। कन्या का पिता वर का स्वागत करता है। वधू का भाई वर को पान खिलाता है और द्वारचार सम्पन्न होने पर बारात पक्ष द्वारा बताशा तथा घरात पक्ष द्वारा अक्षत वर की ओर फेंका जाता है। बारातियों को मिष्ठान खिलाकर पानी पिलाया जाता है और इसके बाद दूल्हा जनवासा में चला जाता है।

इसके बाद बारातियों को भोजन के लिए बुलाया जाता है कन्या पक्ष द्वारा भावी वर को खिलाई जाती है। इसके बाद बारात को भोजन करने के लिए बुलाया जाता है, जिसमें अनेक तरह के व्यंजन तथा मिष्ठान खिलाया जाता है और इसी बीच कुछ लोग परम्परागत शराब के नशे में धुत दिखाई पड़ते हैं और शादी विवाह का पूरा लुफ्त उठा रहे होते है। जनवासा में मनोरंजन के लिए कुछ व्यवस्था बारात पक्ष द्वारा होती है जैसे नौटंकी, कोल दहकी, नाच, स्वांग या गाने बजाने के साथ का मजा लिया जाता है।

ओली भराई

बारातियों के आतिथ्य के बाद वर पक्ष के नजदीकी रिश्तेदारों तथा परिवार के वृद्ध व्यक्तियों की देखरेख में ओली भराई की रश्म सम्पन्न होती है। वर पक्ष के लोग लड़की के लिए कुछ कपड़े, गहने तथा फल–फूल लाते हैं। पण्डित जी के निर्देशन में लड़की मण्डप में देवी देवताओं की पूजा करती है। इस समय लड़की वर वक्ष के सामने बुआ के साथ आती

है। दूल्हे का बड़ा भाई पैसे, गहने, वस्त्र तथा श्रृंगार की सामग्री आदि लड़की की ओली में देता है। मण्डप में उपस्थित सभी व्यक्ति लड़की की न्यौछावर करते है। ससुराल पक्ष द्वारा दिये गये गहने तथा वस्त्र और श्रृंगार सामग्री लड़की पहनकर आती है लड़की की न्यौछावर होती है। लड़की के फूफा लड़की को कमरे में ले जाते हैं वहाँ लड़की कुल देवताओं की पूजा तथा हवन करती है।

कन्यादान तथा पाँव पुजाई

लड़कें को जनवासा से लाकर नियत स्थान पर बैठाया जाता है। लड़के के सामने पीतल की थार रखी जाती है जिसमें एक आटे की मोटी रोटी पर सिक्का चिपकाकर थार में रखते है और उसमें पानी डाल दिया जाता है। लड़की के माता–पिता स्नान करके नये वस्त्र पहनकर वर के समक्ष लड़की के साथ आते हैं। वधू का पिता वर का अक्षत तथा हल्दी का टीका लगाते है तथा वधू का हाथ वर के हाथ में देते है। पण्डित जी द्वारा कुछ मंत्र पढ़े जाते है। वर तथा वधू थार के एक किनारे पर पैर रखते है कन्या के पिता–माता द्वारा वर तथा वधू को क्रमशः तीन–तीन बार पावं जल के साथ पखारते है और अक्षत हल्दी का टीका लगाते है तथा लड़की के माथे पर हल्दी का टीका लगाते हैं। यथा सम्भव कुछ उपहार (गहने, बर्तन तथा गृहस्थी की अन्य वस्तुएँ) दी जाती है इस समय पण्डित जी तथा बुआ को भी कुछ नेग मिलता है।

लावा परसवाई और सिन्दूरदान

पाँव पुजाई की रश्म के बाद लड़के तथा लड़की को खड़ा किया जाता है। लड़की का भाई वर के यहाँ से लाया गया लावा एक सूप में रखकर सात बार लड़की की अंजुली में डालता है जिसे लड़की नीचे गिरा देती है। दुल्हन के भाई को कपड़ा मिलता है। लड़की–लड़के को साड़ी से ढ़का जाता है जहाँ लड़का लड़की की मांग में सात बार सिन्दूर डालता है। इसके बाद दुल्हन की बुआ तथा बहन मिलकर दुल्हन की मांग के सिन्दूर को ठीक करती है।

मंगल फेरे

लड़की तथा लड़के द्वारा हवन कर कुल देवताओं, पूर्वजों का आह्वान किया जाता है उनको साक्षी मानकर वर वधू मगरोहन तथा मण्डप का चक्कर लगाते हुए फेरे लेते है। लड़की तीन बार आगे चलती है और दूल्हा चार बार आगे चलता है। पूर्वजों को साक्षी मानकर दूल्हा–दूल्हन को अंगीकार करता है। इसके बाद जमीन पर गिरे लावा की साथ कुरिया (छोटे टीले) बनायी जाती है दुल्हन लोढे पर पैर रखती है और दूल्हा उसे सरकाते हुए लावा की कुरियों के आगे तक ले जाता है। सभी लोगों को जो मण्डप में उपस्थित होते है लावा दिया जाता है वर वधू को पण्डित जी मंत्रों द्वारा आशीर्वाद तथा मंगलकामना देते है और वर वधू को वचन निभाने के लिए संकल्पित करते है। एक दूसरे के साथ सदैव सुखपूर्वक जीवनयापन की सलाह देते हैं। सभी लोग वर वधू की तरफ लावा फेंककर आशीर्वाद देते हैं।

कोहबर

एक नियत थान पर कमरे को साफ करके कुल देवताओं के प्रतीक कोहबर को दीवाल पर चित्र बनाया गया होता है वहाँ पर वधू मण्डप से उठकर आते है और कुल देवताओं तथा पूर्वजों को हवन कर आशीर्वाद लेते है। कोहबर के समक्ष दीपक जिसमें दो बत्तियाँ जल रही होती है वर वधू एक में मिलाकर दोनों को एकाकार होने के लिए संकल्पित होते है यहाँ वधू की सहेलिया तथा भाभियों द्वारा वर को परेशान किया जाता है और गारी गायी जाती है। दूल्हा भी जनवासा में चला जाता है।

गौना

मण्डप को गोबर से लीप कर साफ और शुद्ध किया जाता है इसके बाद गौना की रश्म शुरू होती है। दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर स्नान करके वर वूधू नये वस्त्र आदि पहनाते है। पण्डित जी की देखरेख में वर तथा वधू मिलकर लावा या अनाज नारियल श्रीफल की सहायता से रश्म की जाती है। पहले वधू की छोटी उम्र में विवाह के बाद तीसरे, पांचवे या सातवें वर्ष जब वधू वयस्क हो जाती थी गौना सम्पन्न किया जाता था। परन्तु अब वयस्क होने के उपरान्त विवाह होने के कारण तथा खर्च का ध्यान में रखकर तुरन्त ही गौना भी करा लिया जाता है।

इसके बाद मण्डप में ही दूल्हे तथा उसके फूफा और सहबाला को बैठाया जाता है । इस समय मजाक का रिवाज है साथ वालों को श्रृंगार सामग्री से सजाया जाता है और हँसी ठिठोली की जाती है। इसी समय घर तथा परिवार के व्यक्तियों के साथ दुल्हन की सहेलियाँ दूल्हे तथा सहवाला को उपहार देती है। इसके बाद विदाई की तैयारी करते है। दुल्हन की विदाई होती है और वह ससुराल चली जाती है।

बारात वापस आने के बाद दूल्हे के घर पर दुल्हन का परक्षन दूल्हे की माता तथा अन्य बुजुर्ग महिलाओं की देखरेख में सम्पन्न होता है। दूल्हे की माता आटे की टिक्की रखती जाती है उस पर पैर रखकर दुल्हन आगे बढ़ती है। रास्ते में दूल्हे की बहन उन्हें अन्दर जाने से रोकती है और उसे नेग मिलता है। दुल्हन को एक कमरे में बैठा दिया जाता है और आस पास की महिलाएँ तथा रिश्तेदार भी दुल्हन को देखने आती है। मुँह दिखाई की रश्म होती है और दुल्हन को उपहार स्वरूप गहने, पैसे तथा वस्त्र आदि मिलता है।

शाम के समय मण्डप के नीचे का सामान लेकर पास के किसी जलाशय के स्थान पर गीत गाती हुई जाती है वहां पानी में प्रवाहित करती है और आपस में एक दूसरे से हँसी ठिठोली तथा पानी तथा कीचड़ से खेलती है। इसे चौथी छुड़ाना कहते है। निश्चित तिथि (दिन) को दुल्हन के भाई आकर दुल्हन को बुला ले जाते हैं और फिर आने जाने का क्रम चलता रहता है। इस प्रकार एक सफल वैवाहिक जीवन की कामना के साथ विवाह संस्कार सम्पन्न होता है।

जनजातीय समाज में विवाह विच्छेद

जनजातियों में प्रायः वैवाहिक संबंधों को धार्मिक बंधन नहीं अपितु समाजिक समझौता माना जाता है। वैवाहिक जीवन को अनावश्यक रूप से संघर्षमय बनाने के बजाय उसे समाप्त करने के लिए कोई न कोई रास्ता अवश्य निकाल लिया जाता है। प्रायः पर स्त्री या पुरूष गमन, स्त्री का बाँझपन, शारीरिक उत्पीड़न आदि विवाह विच्छेद के प्रमुख कारण होते हैं। साधारणतया तलाक लेने वाले को कुछ हर्जाना देना होता है। तलाक के बाद बच्चों पर स्त्री का अधिकार माना जाता है। प्रथम पति के जीवित रहने पर भी किसी दूसरे पुरूष से विवाह करने पर दूसरे पति को प्रायः पहले पति को वधू मूल्य चुकाना पड़ता है। जनजातियों में पुनर्विवाह में कठिनाई नहीं होती है और न ही इसे गलत माना जाता है। फिर भी किसी भी जनजाति में विवाह विच्छेद या तलाक को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में कोल जनजाति जनजातीय परम्पराओं से दूर है लेकिन हिन्दू परम्पराओं के अधिक नजदीक दिखाई पड़ती है। बहुत समय पूर्व से ही हिन्दुओं के सम्पर्क में रहने के कारण अपनी प्राचीन विवाह पद्धति को बदल चुके हैं। विवाह तय करने के लिए लड़के (वर पक्ष) वधू के परिवार वालों के पास प्रस्ताव लेकर जाते हैं। कोल जनजाति में पहले दहेज प्रथा नहीं थी वधू पक्ष द्वारा अपनी इच्छानुसार लड़की के लिए कपड़े, वर्तन आदि अवश्य दिये जाते थे परन्तु वर्तमान परिस्थिति में दहेज का प्रचलन हो गया है जिसमें पैसे, गाड़ी, गहने आदि दोनों पक्षों की सहमति से निर्धारित कर लिए जाते हैं। लड़कियों के विवाह लड़कों की अपेक्षा जल्दी हो जाते हैं।

कोल जनजाति में विधवा विवाह एवं पुनर्विवाह नहीं होता है स्त्री के प्रथम पति की मृत्यु होने पर वह किसी दूसरे पुरुष के साथ पत्नी के रूप में रहने लगती है किन्तु किसी प्रकार के पुनर्विवाह की रस्म या उत्सव नहीं होता है। कभी–कभी सत्यनारायण की कथा सुनकर आसपास के लोगों तथा रिश्तेदारों को भोजन करा दिया जाता है। कोल जनजाति में विवाह विच्छेद या तलाक के प्रमुख कारणों से पत्नी के दूसरों के साथ सम्बन्ध, सन्तान न होना, पत्नी का झगड़ालू होना, अपने मन का कार्य करना प्रमुख रूप से देखा गया है वही पति का नपुंसक होना, दूसरी स्त्री से सम्बन्ध, पत्नी को मारना–पीटना, झगडालू होना, काम–काज न करना प्रमुख कारण है। अधिकांशतया लड़ाई–झगड़ा, मारना–पीटना ही विवाह विच्छेद के प्रमुख कारण देखे गये हैं।

सन्दर्भ

मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति – गोपाल भार्गव, कल्पज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011

सोन के पानी का रंग – दूव कुमार मिश्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1983

मध्यप्रदेश ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सिंहावलोकन – धीरेन्द्र वर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1955

कोल – महेशचन्द्र शांडिल्य, डॉ. कपिल तिवारी, (संपा.) मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् भोपाल, 1999

बघेल संस्कृति और साहित्य – गोमती प्रसाद विकल, राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय, भोपाल (म.प्र.), 1999

मध्यप्रदेश के आदिवासी – शिवकुमार तिवारी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1986

मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति – शिवकुमार तिवारी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1988

लोक संस्कृति और इतिहास – बद्रीनारायण, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994

लोक संस्कृति की रूपरेखा – कृष्णदेव उपाध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009

सम्पदा – डॉ. कपिल तिवारी (संपा.), आदिवासी लोक कला अकादमी, भोपाल, 2006

Rewa State Gazetter - C.E. Luard, Naval Kishore Publishers, Lucknow, 1907

The Kol Tribes of Central India & Walter G. Griffiths, The Royal Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1976